स्वाध्यायकारी (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) का कक्षा सात के बच्चों के व्यक्तित्व कारकों, शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन पर प्रभाव–एक अध्ययन

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल की एम.एड. (प्रारंभिक शिक्षा)
उपाधि की आंशिक संपूर्ति
हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध
2004-05

निर्देशिका :
डॉ. मधुलिका एस. पटेल
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

शोधकर्ता
संजय परमार
एम.एड.

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (N.C.E.R.T.) श्यामला हिल्स,
भोपाल (म.प्र.)

2004:2005

स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) का कक्षा सात के बच्चों के व्यक्तित्व कारकों, शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन पर प्रभाव–एक अध्ययन

D-194

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल की एम.एड. (प्रारम्भिक शिक्षा) उपाधि की आंशिक संपूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

2004–05

निर्देशिका :
डॉ. मधूलिका एस. पटेल
प्रवाचक, शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

शोधकर्ता :
संजय परमार
एम.एड.

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (N.C.E.R.T.) श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री संजय परमार** क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी.) भोपाल में एम.एड. (प्रारंभिक शिक्षा) के नियमित छात्र है। इन्होंने बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल से शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि करने हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध "स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) का कक्षा सात के बच्चों के व्यक्तित्व कारकों, शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन पर प्रभाव–एक अध्ययन" मेरे मार्गदर्शन में पूर्ण किया है। यह शोधकार्य इनकी निष्ठा एवं लगन से किया गया मौलिक प्रयास है, जो पूर्व में इस आशय से विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय की एम.एड. (प्रारंभिक शिक्षा) 2004–05 उपाधि की आंशिक संपूर्ति हेतु प्रस्तुत है।

स्थान : भोपाल

दिनांक : २१.३.०५

निर्देशिका

मधूलिका

डॉ. मधूलिका एस. पटेल
प्रवाचक, शिक्षा विभाग,
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,
(एन.सी.ई.आर.टी.),
भोपाल (म.प्र.)

प्राक्कथन

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध **"स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) का कक्षा सात के बच्चों के व्यक्तित्व कारकों, शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन पर प्रभाव एक अध्ययन"** की सम्पन्नता का सम्पूर्ण श्रेय श्रद्धेय डॉ. मधूलिका एस. पटेल (प्रवाचक शिक्षा विभाग) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल को है। जिन्होंने निरंतर उचित परामर्श, पर्याप्त निर्देश तथा हमेशा प्रोत्साहन देकर शोध कार्य पूर्ण करने में अमूल्य सहयोग प्रदान किया है। प्रस्तुत लघुशोध आपके द्वारा शोधकार्य में आत्मीय व्यवहार एवं अविस्मरणीय वात्सल्यपूर्ण सहयोग का प्रतिफल है। जिन्होंने मुझे स्वयं के बहुमूल्य समय में से एक अध्यापक, अभिभावक तथा निर्देशक रूप में पर्याप्त समय दिया है। अतः में इनका ऋणी हूँ।

मैं आदरणीय प्राध्यापक डॉ. एम. सेन गुप्ता, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल तथा डॉ. (श्रीमती) अविनाश ग्रेवाल, विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के स्नेहपूर्ण व्यवहार, सहयोग तथा आशीर्वाद हेतु सहृदय से आभारी हूँ।

मै मार्गदर्शक श्रद्धेय डॉ. यू. लक्ष्मीनारायण (प्रवाचक) का आभारी हूँ। जिन्होंने उचित परामर्श पर्याप्त निर्देश तथा अनवरत् प्रोत्साहन देकर शोध कार्य पूर्ण करने में अमूल्य सहयोग प्रदान किया है।

मैं डॉ. (श्रीमती) सुनीती खरे का हृदय से कृतज्ञ हूँ। जिन्होंने समय-समय पर उचित मार्गदर्शन करके, मेरे इस शोधकार्य में सहयोग दिया।

मैं पुस्तकालय अध्यक्ष पी.के. त्रिपाठी एवं पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों का हृदय से आभारी हूँ।

मेरे परम मित्रों हर्षद, चन्द्रेश, अमोल, चन्दन, केशव, धनन्जय, विपुल और .... का आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मुझे शोधकार्य के लिये सहयोग एवं प्रेम दिया।

मैं अपनी आदरणीय माताजी जशोदा तथा पिताजी तथा छोटी बहन हिना-गीता तथा परिवार के शुभचिंतकों का जीवनपर्यन्त चिरऋणी रहूंगा, जिन्होंने मेरे अध्ययन में महत्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु तन, मन, धन से सहयोग तथा आशीर्वाद दिया है।

SParmar

भोपालः
दिनांक : 5/04/2005

संजय परमार
एम.एड. (प्रारम्भिक शिक्षा)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, (एन.सी.ई.आर.टी.)
भोपाल (म.प्र.)

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्रमाण पत्र

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय 1–17

शोध परिचय

- ❖ प्रस्तावना
- ❖ स्वाध्याय क्या है ?
- ❖ स्वाध्याय की बैठक में क्या होता है ?
- ❖ स्वाध्याय की दृष्टि में क्या है ?
- ❖ स्वाध्याय क्या काम करता है ?
- ❖ स्वाध्याय क्या करता है ?
- ❖ स्वाध्याय से क्या मिलता है ?
- ❖ स्वाध्याय का ध्येय क्या है ?
- ❖ स्वाध्याय कार्य की प्रवृत्ति परिचय
- ❖ अध्ययन की आवश्यकताएँ
- ❖ समस्या कथन
- ❖ अध्ययन के उद्देश्य
- ❖ अध्ययन की परिकल्पनाएँ
- ❖ अध्ययन की सीमाएँ

द्वितीय अध्याय 18–25

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

- ❖ भूमिका
- ❖ संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन के लाभ
- ❖ पूर्व शोध कार्य का आंकलन

तृतीय अध्याय 26–31

शोध प्रविधि

- ❖ भूमिका
- ❖ न्यादर्श चयन
- ❖ शोध में प्रयुक्त चर
- ❖ शोध में प्रयुक्त उपकरण
- ❖ प्रदत्तों का संकलन
- ❖ प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ

LIBRARY Bhopal

चतुर्थ अध्याय 32–39
प्रदत्त विश्लेषण, परिणाम एवं व्याख्या

पंचम अध्याय 40–42
निष्कर्ष, सुझाव एवं भावी शोध हेतु सुझाव
- ❖ निष्कर्ष
- ❖ सुझाव
- ❖ भावी शोध हेतु सुझाव

षष्ठम अध्याय 43–53
संक्षेपिका
- ❖ शोध परिचय
- ❖ अध्ययन की आवश्यकता
- ❖ समस्या कथन
- ❖ अध्ययन के उद्देश्य
- ❖ अध्ययन की परिकल्पनाएँ
- ❖ अध्ययन की सीमाएँ
- ❖ न्यादर्श चयन
- ❖ शोध में प्रयुक्त चर
- ❖ शोध में प्रयुक्त उपकरण
- ❖ प्रदत्तों का संकलन
- ❖ प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ
- ❖ निष्कर्ष
- ❖ सुझाव
- ❖ भावी शोध हेतु सुझाव

संदर्भ ग्रंथ